बाल प्रसंग

जून 2025 राष्ट्रीय बाल भवन अंक 02

राष्ट्रीय बाल भवन
कोटला मार्ग, नई दिल्ली-110002

बाल प्रसंग

राष्ट्रीय बाल भवन
NATIONAL BAL BHAVAN

विषय सूची

1.	निदेशक की कलम से	3
2.	बच्चों की स्वरचित कविताएँ – आयु वर्ग 10 से 13 वर्ष	4–9
3.	विज्ञान विभाग की गतिविधियों की एक झलक	10
4.	बच्चों की स्वरचित कविताएँ – आयु वर्ग 13 से 16 वर्ष	11–14
5.	प्रदर्शन कला विभाग की गतिविधियों की एक झलक	15
6.	पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन – आयु वर्ग 10 से 13 वर्ष	16
7.	पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन – आयु वर्ग 13 से 16 वर्ष	17
8.	शिल्पकला एवं चित्रकला विभाग की गतिविधियों की एक झलक	18
9.	बच्चों के लिए अभ्यास कार्य (क) रिक्त स्थान भरो (ख) विलोम शब्द (ग) पर्यायवाची शब्द (घ) नीचे लिखे एकवचन शब्दों के बहुवचन शब्द लिखें। (ड.) नीचे दिये गये अंकों को देवनागरी में लिखें।	19–23
10.	शारीरिक शिक्षा विभाग की गतिविधियों की एक झलक	24
11.	कर्मचारियों की स्वरचित काव्य रचनाएँ।	25–28
12.	बाल भवन की कुछ अन्य गतिविधियों की एक झलक	29
13.	बच्चों एवं अभिभावकों के मुख से	30–32

प्रस्तुति

हिन्दी अनुभाग

राष्ट्रीय बाल भवन, कोटला मार्ग

नई दिल्ली-110002

निदेशक की कलम से .....

राष्ट्रीय बाल भवन के हिन्दी अनुभाग द्वारा प्रकाशित **'बाल प्रसंग'** के माध्यम से हिन्दी में कार्य करना हम सभी के लिए सम्मान एवं गौरव की बात है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार हिन्दी भारत की राजभाषा है, राजभाषा का अर्थ है संविधान द्वारा स्वीकृत सरकारी कामकाज की भाषा। किसी देश का सरकारी कामकाज जिस भाषा में करने का कोई निर्देश संविधान के प्रावधानों द्वारा किया जाता है, वह उस देश की राजभाषा कही जाती है। 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने जनभाषा हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। इसलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हम **'हिन्दी दिवस'** के रूप में मनाते हैं। हिन्दी दिवस/हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान प्रतियोगिताएँ कराना इसलिए आवश्यक है, जिससे बच्चों एवं कर्मचारियों में विश्वास, आत्म-निर्भरता की प्रवृत्ति तथा मूल्यों के प्रति प्रेम जागृत हो सके और वे राष्ट्र को शक्तिवान व सम्पन्न बनाने में अपना योगदान दे सकें।

इस द्वितीय अंक में **'हिन्दी पखवाड़ा' 2024** कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय बाल भवन, जवाहर बाल भवन (माण्डी), सदस्य स्कूली बच्चों तथा कर्मचारियों की स्वरचित रचनाओं को शामिल किया गया है। राष्ट्रीय बाल भवन के हिन्दी अनुभाग के इस सराहनीय प्रयास से मुझे बहुत हर्ष हो रहा है।

पिछले वर्ष की 'बाल प्रसंग' पत्रिका के लिए भी अभिभावकों और बच्चों से हमें बहुत अच्छी प्रतिक्रियाएं मिली हैं।

मुझे आशा है कि इस 'संकलन' में प्रकाशित रचनाएं भी आपको अवश्य पसन्द आएंगी।

(मुक्ता अग्रवाल)

बच्चों की स्वरचित कविताएं

आयु वर्ग

10–13 वर्ष

प्रकृति

(प्रथम पुरस्कार)

मेरी प्यारी धरती
हरी-भरी धरती
फूलों से खिलती है
मेरी सुंदर धरती।

रंग-बिरंगे फूल हैं इसका दिल
पशु-पक्षी हैं इसकी जान
इसमें राज हैं इतने
जिससे तुम हो अनजान।

पर समय आ गया है अपने प्यार को जताने का
धरती को प्रदूषण से बचाने का
मनुष्य को राह दिखाने का
जीवन जीने का नया अंदाज सिखाने का।

मत काटो पेड़
यह मेरी चेतावनी है
इसके बिना तुम जी नहीं सकते
तुम मर-मिट जाओगे।

वैभव ठाकुर – बाल भारती पब्लिक स्कूल, गंगा राम अस्पताल मार्ग

मन करता है

(प्रथम पुरस्कार)

अगर मन करे प्यार करने का, तो किताबों से प्यार करो!
अगर मन भागने को करे, तो सुबह 30 मिनट भागो!!
अगर मन करे कुछ बनने का, तो खूब मेहनत करो!
अगर मन करे खेलने का, तो किताबों के साथ खेलो!!
अगर मन करे देखने का, तो अच्छी चीज़ें देखो!
अगर मन करे कुछ सुनने का, तो अच्छी चीज़ें सुनो!!
अगर मन करे कुछ बोलने का, तो सोच-समझ कर बोलो!
अगर किसी विषय में अधिक रूचि न हो, तो दूसरे विषय में रूचि लो!!
अगर किसी विषय में दिक्कत हो, तो ध्यान लगाकर पढ़ो!
अगर मन करे विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने का,
तो माँ-बाप से पूछकर जाओ, लड़कर मत जाओ!!
अगर मन करे छोटे रास्ते से पैसे कमाने का,
तो सही रास्ते से पैसे कमाओ क्योंकि तुम्हारा परिवार तुम्हारे ऊपर भरोसा करता है!!
अगर मन करे मारने का तो, अपने लालची मन को मारो!
अगर मन करे कुछ खरीदने का, तो अच्छी किताबें खरीदो!!
अगर मन करे कुछ लाने का तो, मेहनती-पन को अपने अंदर लाओ!
अगर मन करे दुनिया को कुछ कर दिखाने का, तो पीछे मत हटो!!
अगर मन करे कुछ करने का तो,
दुनिया जो भी बोले उससे डरो मत, बस अपने आप पर विश्वास करके आगे बढ़ो!!
अगर मन करे दुनिया को अपने आगे झुकाने का,
तो बहुत परिश्रम करो!!
अगर मन करे कि जहाँ तुम जाओ लोग सम्मान करें,
तो अपने ऊपर भरोसा रखो कि तुम कर लोगे!!

सूर्यांश जैन - राष्ट्रीय बाल भवन

प्रकृति

(द्वितीय पुरस्कार)

है प्रकृति कोई जादूगरनी,
इसकी कलाकृति है रंग-बिरंगी,
रहस्यों से है इसका बड़ा ताल-मेल,
अनोखा है इसकी कठपुतलियों का खेल!

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ, नारा लगाया है,
प्रकृति और धरा ने भी इस नारे को अपनाया है,
मानव के कल्याण में धरा को बड़ा पछतावा है,
पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ बढ़ती प्लास्टिक को कम कराओ,
धरती की खूबसूरती को अपनाओ,
यही प्रकृति का दावा है!

है अनेक जंगल, होता है उन जंगलों में मंगल,
जानवर करते अठखेलियाँ,
उगती हैं सुन्दर फूलों पर पंखुड़ियाँ,
आती उड़-उड़कर अनेक नन्हीं तितलियाँ!

खूबसूरती है प्रकृति की अपरम्पार
करती रहती हैं ये चमत्कार बारम्बार
प्रकृति हमारी जान है,
हमारे तन उसी को प्रदान है!

प्रकृति को बर्बाद ना करने का ले लिया है संकल्प,
अब नहीं बचा है कोई दूसरा विकल्प।

सागरिका अवाना - बाल भारती पब्लिक स्कूल, नोएडा

मन करता है

(तृतीय पुरस्कार)

मन करता है.....
कि उड़ो ठण्डे आसमान में,
मन करता है.....
कि दौड़ो महीना-ए-सावन में!
मन करता है.....
कि घूमो एक आज़ाद-सी दुनिया में,
मन करता है.....
कि चलो एक खूबसूरत से ब्रह्मांड में!
मन करता है.....
कि तैरो पानी की दुनिया में,
मन करता है.....
कि गायब हो जाओ इस विश्व में।
मन करता है.....
कि नाचो इस संसार में,
मन करता है.....
कि खिल जाओ हसीन बागों में।

इक़रा शुएब - न्यू हॉराइज़न स्कूल

प्रकृति

(तृतीय पुरस्कार)

भगवान का रूप है प्रकृति
मन को सुख देती है प्रकृति
समाज के लिए होती है भगवान जैसी
पूजा करनी चाहिए हमें इसकी

हमारे जीवन का आधार है प्रकृति
मानव की हर जरूरत को पूरा करती है प्रकृति
सदियों से दे रही है हमारा साथ
चलते हैं हम पकड़ के इसका हाथ

खाने के लिए फल
पीने के लिए जल
जीवन में रोशनी भरती है प्रकृति
सुन्दर दृश्यों का दर्शन करवाती है प्रकृति

हमें बचाना है इसे आने वाले कल के लिए
अपनों के लिए, अपने आप के लिए
जिस प्रकृति ने हमें इतना सब कुछ दिया
क्या मानव ने उसका ध्यान किया?

प्रनवी जोशी – बाल भारती पब्लिक स्कूल, द्वारका

बाल भवन के विज्ञान विभाग की गतिविधियों की एक झलक

बच्चों की स्वरचित कविताएं

आयु वर्ग

13-16 वर्ष

जो कह नहीं पाते

(प्रथम पुरस्कार)

बचाओ हमें, चिल्ला रही है,
पानी की लहरें मरते दम तक भी,
धरती को, बचाते हुए भी,
मनुष्य को ना समझ पा रही है।

पानी की लहरें जो, अपने कण छलकाती है,
जीवन दान वह कर जीवन भर,
अपने त्याग से प्यास मिटा कर,
सबसे महान कहलाती है।

किंतु लहरें पक्का कहती होंगी,
पीने का पानी भी मारा,
हम को कहते हैं खारा,
पानी बचाओ, कहने वाला 'मनुष्य ही है ढोंगी'।

मस्ती में बहते थे यह,
कहते हैं-'क्या हम विलुप्त हो जाएंगे?'
शायद मनुष्य हमें बचाएंगे,
मनुष्य हमें बचाएंगे।

मैं पूछती हूँ-'क्या पानी बिन हम रह पाए हैं?'
क्या कभी-भी रह पाएंगे?
गट प्यालों में भरे हुए-क्या यूँ ही बर्बाद हो जाएंगे?
क्या यूँ ही बर्बाद हो जाएंगे?

मैं कहती हूँ कि ढोंग नहीं,
करो पानी बचाने का आगाज़
इस छोटी-सी मदद में भी लगता है बहुत साहस,
लगता है बहुत साहस।

अराध्या कुमार - बाल भारती पब्लिक स्कूल, द्वारका

देश भक्ति

(द्वितीय पुरस्कार)

जागो रे जागो, जागो रे जागो रे
हाथ आगे बढ़ा, परोपकार करो,
भय रिक्त बन, देश के लोगों का उद्धार करो,
लोक-कल्याण कर, देश के दुखों का संहार करो।

जागो रे जागो, जागो रे जागो रे
कवच-ढाल उठा, देश की सुरक्षा के काबिल बन,
न आने पाए कोई रावण देश के आँगन में,
खींच लक्ष्मण रेखा, उठा लो तलवार।

जागो रे जागो, जागो रे जागो रे,
यह अवसर फिर न मिलेगा कभी,
देश के लिए कुछ काम करो।
देश का कुछ नाम करो।

सूर्य जैसे देश में प्रकाश फैला,
कर्ण-अर्जुन के समान महान बनो,
देश भक्ति ही परम भक्ति है
देश के लिए जीना देश के लिए मरना,
यही प्रथम धर्म है, यही बहुमूल्य क्रांति है।

हो विज्ञान, खेल या हो युद्धभूमि,
जी जान लगा कर परिश्रम करो,
देश भक्ति की प्रवाह में तुम पंछी बन,
देश की सफलता का राज़ बनो।

आहना रावत – बाल भारती पब्लिक स्कूल, नोएडा

उफ.... ये गर्मी

(तृतीय पुरस्कार)

उफ ये मौसम गर्मी का,
खाए आधे से ज्यादा साल,
मगर जितने हैं लाभ इसके,
हाल करे उतना ही बेहाल।

हवाएँ उसकी ऐसी ना,
कि पहुँचाए सुख सब तक,
हवाएँ उसकी ऐसी भी,
कि झेल न पाए कोई अब तक।

गर्मी के मौसम ने,
दिया है हमें बहुत कुछ,
सुख इसका अब भी,
आता है हर साल।

पर वह सुख भी ऐसा है,
कि कर दे बुरा हाल,
कि याद अपनी जननियों को,
करे माँ के लाल।

मरियम फातिमा – न्यू हॉराइज़न स्कूल

बाल भवन के प्रदर्शन कला विभाग की गतिविधियों की एक झलक

पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन

(आयु वर्ग : 10 से 13 वर्ष)

दीपाली जोशी – प्रथम पुरस्कार

कृष्ण कुमार – द्वितीय पुरस्कार

अतिफा हैदर – द्वितीय पुरस्कार

आराध्या पाँचाल – तृतीय पुरस्कार

वेदीका – सांत्वना पुरस्कार

पुरस्कृत चित्रांकन एवं स्लोगन

(आयु वर्ग : 13 से 16 वर्ष)

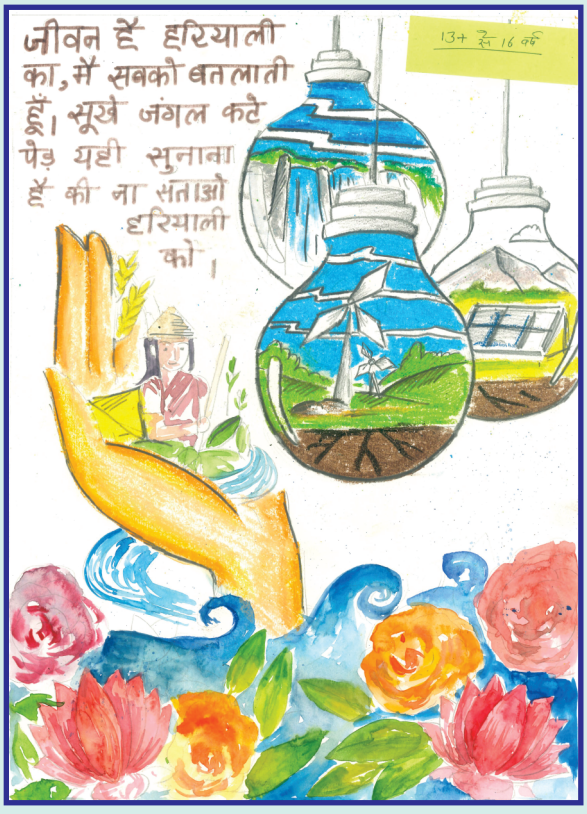

घृति – प्रथम पुरस्कार

बैजिक साहा – तृतीय पुरस्कार

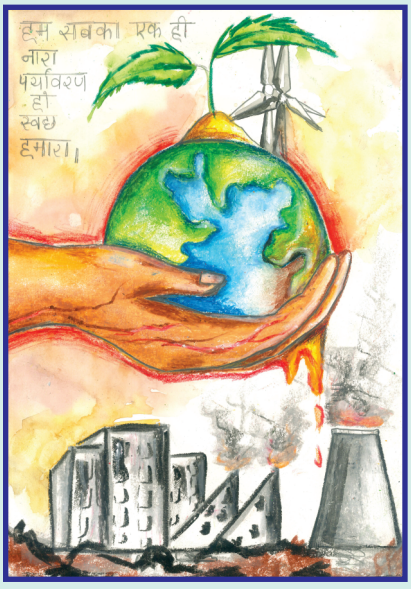

गौरव – तृतीय पुरस्कार

समायरा – द्वितीय पुरस्कार

जाह्नवी गोयल – सांत्वना पुरस्कार

अतुल – सांत्वना पुरस्कार

बाल भवन के शिल्पकला एवं चित्रकला विभाग की गतिविधियों की एक झलक

बच्चों
के लिए
अभ्यास कार्य

(क) रिक्त स्थान के लिए दिए गए शब्दों में से उचित शब्द का चयन करें।

1. भारत देश को विदेशों में ..... के नाम से भी जाना जाता है।
   (हिन्दू, हिन्दुस्तान, भारतवर्ष)
2. पृथ्वी का सबसे निकटतम ..... तारा है।
   (सूर्य, चाँद, बुध, नेपच्यून)
3. दीपावली पर सभी लोगों ने अपनो घर को ..... से सजाया।
   (पटाखे, दियों, बिजली)
4. शिक्षा संस्थाओं में ..... की समस्या राष्ट्रव्यापी समस्या बन गई है।
   (कालाधान, आतंकवाद, अनुशासन, जनसंख्या)
5. त्रिभुज के तीनों कोणों का योग ..... होता है।
   (180 डिग्री, 160 डिग्री, 120 डिग्री, 80 डिग्री)
6. 90 डिग्री का कोण ..... कहलाता है।
   (द्विकोण, त्रिभुज, चतुर्भुज, समकोण)
7. कुंती का विवाह महाराजा ..... से हुआ।
   (दशरथ, पांडु, बलदेव, धृतराष्ट्र)
8. ज्यादा तला-भुना और मसाले वाला भोजन ..... होता है।
   (स्वादिष्ट, पौष्टिक, फायदेमंद, हानिकारक)
9. परिश्रम सफलता की ..... है।
   (सीढ़ी, कुँजी, जड़, कृति)
10. मेरी ..... है कि मुझे दो दिन की छुट्टी दी जाए।
    (प्रार्थना, याचना, पूजा, अराधना)

(ख) विलोम शब्द

1. कल – ....
2. भोर – ....
3. आसमान – ....
4. सीधा – ....
5. ऊपर – ....
6. दाएं – ....
7. मेहनती – ....
8. प्रकाश – ....
9. कठिन – ....
10. सफल – ....

(ग) पर्यायवाची शब्द

1. पानी – ....
2. आग – ....
3. किताब – ....
4. आँसू – ....
5. घोड़ा – ....
6. कंकाल – ....
7. बहना – ....
8. आकाश – ....
9. धन – ....
10. भगवान – ....

उत्तरमाला

क. रिक्त स्थान

1. हिन्दुस्तान 2. सूर्य 3. दियों 4. जनसंख्या 5. 180 डिग्री 6. समकोण 7. पांडु 8. हानिकारक 9. कुँजी 10. प्रार्थना

ख. विलोम शब्द

1. आज 2. शाम 3. ज़मीन 4. उल्टा 5. नीचे 6. बाएं 7. कामचोर 8. अँधेरा 9. सरल 10. असफल

ग. पर्यायवाची शब्द

1. नीर 2. अग्नि 3. पुस्तक 4. अश्रू 5. अश्क 6. ढाँचा 7. रिसाव 8. आसमान 9. राशि 10. ईश्वर

(घ) नीचे लिखे एकवचन शब्दों के बहुवचन शब्द लिखें।

क्र.सं.	एकवचन	बहुवचन
1.	घर	.....
2.	आराधना	.....
3.	शिक्षा	.....
4.	बोतल	.....
5.	राजा	.....
6.	जानकारी	.....
7.	वह	.....
8.	अपना	.....
9.	अत्याचार	.....
10.	चम्मच	.....
11.	क्षेत्र	.....
12.	त्रिभुज	.....
13.	प्रदानता	.....
14.	सद्‌गुण	.....
15.	संभावना	.....
16.	माँ	.....

(ड) नीचे दिये गये अंकों को देवनागरी में लिखें।

1. 17 : ....
2. 25 : ....
3. 28 : ....
4. 44 : ....
5. 48 : ....
6. 52 : ....
7. 57 : ....
8. 64 : ....
9. 74 : ....
10. 78 : ....
11. 81 : ....
12. 87 : ....
13. 89 : ....
14. 90 : ....
15. 97 : ....
16. 99 : ....

उत्तरमाला

घ. नीचे लिखे एकवचन शब्दों के बहुवचन शब्द लिखें।

1. घरों 2. अराधनाएँ 3. शिक्षाएँ 4. बोतलें 5. राजाओं 6. जानकारियाँ 7. वे 8. अपने
9. अत्याचार 10. चम्मचें 11. क्षेत्रों 12. त्रिभुजाएँ 13. प्रदानताएँ 14. सद्गुणों 15. संभावनाएँ 16. माताएँ

ड. नीचे दिये गये अंकों को देवनागरी में लिखें।

1. सत्रह, 2. पच्चीस, 3. अठ्ठाईस, 4. चवालीस, 5. अड़तालीस, 6. बावन, 7. सत्तावन,
8. चौंसठ, 9. चौहत्तर, 10. अठहत्तर, 11. इक्यासी, 12. सत्तासी, 13. नवासी, 14. नब्बे,
15. सतानवें, 16. निनयाणवें

बाल भवन के शारीरिक शिक्षा विभाग की गतिविधियों की एक झलक

कर्मचारियों की स्वरचित कविताएं

वेदना प्रकृति की

(प्रथम पुरस्कार)

मत काटो मुझको ऐसे तुम, दर्द मुझे भी होता है
मानव का ये व्यवहार देख, मेरा मन भी रोता है
मैं सबको छाया देता, हरियाली मुझसे आती है
तुम दिखलाते अपनी ताकत, क्या तुम्हें दया नहीं आती है

पहले शहरों ने अलग किया, अब गाँव ने किया पराया है
हे मानव तू पछताएगा, ये तेरा किया कराया है
मैंने तुझको अपना माना, सोचा था साथ बढ़ेंगें हम
तूने मुझको जड़ से काटा, अस्तित्व मेरा कर दिया खत्म

फिर भी कुछ भी मैं ना बोली, मुस्कान बिखेरे रही सदा
तू ही अब इसको भुगतेगा, और पछताएगा सदा-सदा
हे मानव तू कितना लोभी, जगह-जगह तूने खोदा
सड़कों का निर्माण किया, और लगा दिया छोटा पौधा

तूने मुझको इतना काटा, मेरा मन इतना भर आया
अब तू गर्मी में झुलस रहा, वातानुकूल घर करवाया
ऊँचे पर तुझको रहना था, तो मुझको क्यूँ बर्बाद किया
अब तेरा घर जब उजड़ गया, तो करता क्यूँ विलाप यहाँ

चट्टानों को तूने काटा, जंगल सारे बर्बाद किए
हीरा सोने के चक्कर में, कितने तूने खिलवाड़ किए
ज्वालामुखी से डरता तू, भूकम्प से थर्राता है
अपने बोये बीज से, इतना क्यूँ घबराता है

गर तू ना अब सुधरेगा, बाढ़, चक्रवात आएंगे
तेरे लोभ के चक्कर में, तेरा अस्तित्व मिटाएंगे।

राहुल (रा.बा.भ.)

वेदना प्रकृति की

(द्वितीय पुरस्कार)

देख रहा हूँ खड़ा, कई दशकों से मैं इस धरती पर
जो दिगभ्रमित मनुष्य ढा रहा क्रूर वेदना प्रकृति पर
एक समय था, थी परिपुष्ठा, द्युति से भरी धरा मेरी
धीरे-धीरे अब जर-जर निष्प्राण, निराश मृदा मेरी
इक चंचल अल्हड़ युवती सी बहती थी वायु शीतल
हुई विमूढ़ा, मलिन हुई जो प्राणदायिनी थी अविरल
विगत समय मेरे दामन में बच्चे खेला करते थे
मेरी शाखाओं पर वो चढ़-चढ़ कर हेला करते थे
उनके बचपन को छूकर मैं भी पुलकित हो जाता था
मैं बूढ़ा दरख्त, बालक बन, उनको खूब झुलाता था
अब उस बचपन का भी क्यूँ दम घोट दिया है मानव ने
बच्चों का बचपन छीना, टीवी, मोबाइल के दानव ने
यदा-कदा बारिश की बूँदें व्यथा सुनाती रहती हैं
है वितान भी दूषित अब मेघा भी दूषित रहती है
अब जीवों को कष्ट दिया न किया मोल भी पानी का
जिजीविशा के धोखे में विष फैलाया मन मानी का
जल तो जीवन है उसके बिन है विनाश हर प्राणी का
पर परवाह नहीं नर को प्रकृति की चुनर धानी का
पहले कचरा फैलाता है फिर दूषण को रोता है
अधिक खनन और पतित रसायन तालमेल को खोता है
कटे वृक्ष पर वृक्ष इमारत बन बन सब दिश प्रकट हुई
सुदृढ़ सशक्त उर्वरा हाय! हो महीन सब जलज हुई
खलिहानों की आभा, कलकल बहती अनिल विलुप्त हुई
हाय नियति! संज्ञान नहीं मानव को, खतरा पहचानो!
अब भी संभल सके यदि तो सृष्टि आशीष लुटाएगी
प्रकृति फिर वेदना तज सुरमयी संगीत सुनाएगी।

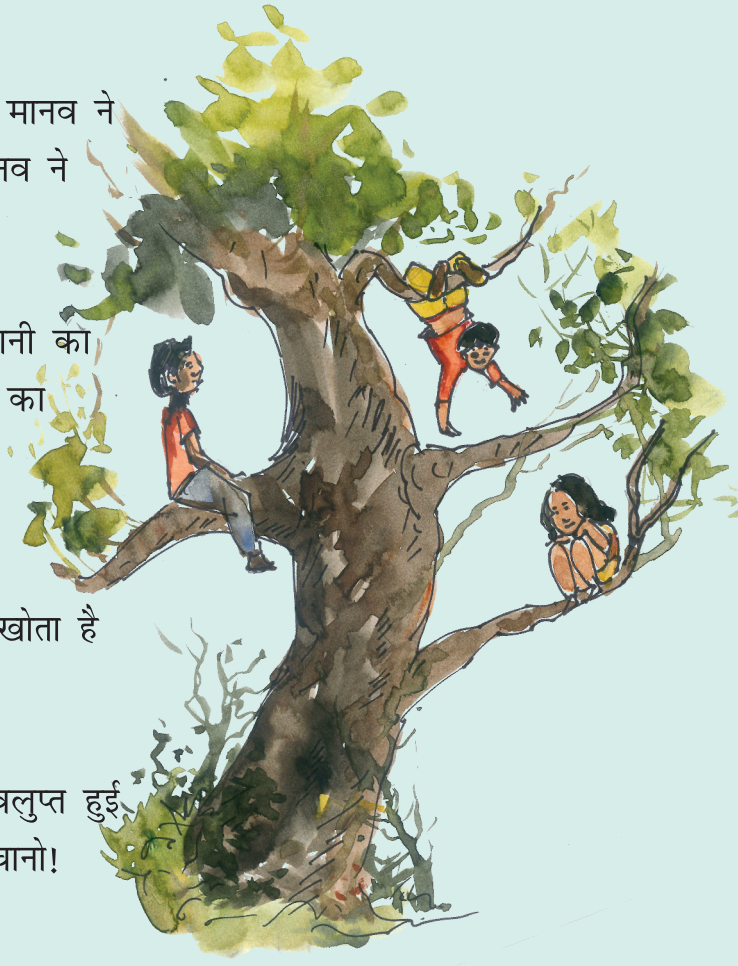

नेहा वत्स खंकरियाल (रा.बा.भ.)

परिवर्तन

(तृतीय पुरस्कार)

जिंदगी में बदलाव आना जीवन की नियति है।
बदलते ही जाना, बदलते ही जाना
यही परिवर्तन है, यही परिवर्तन है।

बीज से अंकुरित आया, फिर पौधा आया अंकुरित से,
पौधे से फिर पेड़ आया, आया फल फिर पेड़ से।
फिर आया एक दिन ऐसा भी, फिर क्रिया हुई पुनः शुरू से,
यही परिवर्तन है, यही परिवर्तन है।

देख बचपन बच्चे का अपना
कट रही जवानी मेरी।
साथ जीवनी का साथ मेरा
कट रही बुढ़ापे की जिंदगानी मेरी।

देखता हूँ बचपन पोत-पोतियों का अपना
जो कल कुछ और था, वो आज कुछ और है
और ये भी जानता हूँ मैं कि, वो कल फिर कुछ और है
यही परिवर्तन है, यही परिवर्तन है।

आया मैं बाल भवन में आज, लिपिक पद संभाला मैंने।
सीखा नोटिंग, ड्राफ्टिंग मैंने, और सीखा काम कार्यालय मैंने।
कल खाली था आज निपुण हूँ
यही तो परिवर्तन है, यही तो परिवर्तन है।

इरफ़ान अली (ज.बा.भ. मांडी)

बाल भवन की कुछ अन्य गतिविधियों की एक झलक

बच्चों एवं अभिभावकों के मुख से

बच्चों के मुख से

मैं अपने मम्मी-पापा के साथ घूमने आया हूँ। मुझे मिनी चिड़िया घर बहुत अच्छा लगा, रंग-बिरंगे पक्षी चहकते हुए लग रहे हैं, जैसे गाना गा रहे हों। मैं यहाँ का सदस्य बनकर बहुत सारी चीज़ें सीखूँगा और खूब मौज मस्ती करूँगा।

— मास्टर आदान (आयु 7 वर्ष)

मैं यहाँ भरतनाट्यम और हारमोनियम सीखती हूँ यहाँ के प्रशिक्षक बहुत अच्छे हैं, यहाँ का शुद्ध वातावरण है। यहाँ खेल खेलने में भी कोई रोक टोक नहीं है मैं यहाँ पाँच वर्ष से आ रही हूँ।

— कु. अराध्या (आयु 10 वर्ष)

मुझे यहाँ बैडमिंटन और खगोल विज्ञान की गतिविधि बहुत अच्छी लगती हैं। अनिकेत सर और रश्मि मैम भी बहुत अच्छे हैं। मुझे यहाँ बहुत मज़ा आता है, यहाँ मैं आ कर स्कूल की टैंशनों से मुक्त हो जाता हूँ। मैं यहाँ का छ: वर्ष से सदस्य हूँ।

— मास्टर आशीष कुमार (आयु 12 वर्ष)

मुझे यहाँ गाना गाना और गिटार बजाना बहुत अच्छा लगता है और स्टेज तक पहुँचने का मौका भी मिलता है। यहाँ के प्रशिक्षक और दोस्त बहुत अच्छे लगते हैं। मुझे यहाँ बहुत मज़ा आता है।

— कु. तविषा झा (आयु 9 वर्ष)

मुझे यहाँ चित्रकला सीखना बहुत अच्छा लगता है। और मिनी रेलगाड़ी में सैर करना बहुत अच्छा लगा। मुझे यहाँ मैदान में भागना, खेलना बहुत अच्छा लगता है। मैं हर रोज आता हूँ।

— मो. हुजैफा कमर (आयु 5 वर्ष)

यहाँ का वातावरण बहुत अच्छा है। मैं यहाँ आज़ादी से घूमती हूँ। यहाँ का वातावरण मुझे शहर और गाँव दोनों से अवगत कराता है। जो मुझे बहुत पसंद है। मैं यहाँ की 3 साल से सदस्य हूँ और हर रोज़ आती हूँ।

— कु. रिद्धी (आयु 12 वर्ष)

अभिभावकों के मुख से

यहाँ बच्चे बहुत सुरक्षित हैं, प्रशासन का बहुत अच्छा नियंत्रण है। मैं यहाँ अपनी दोनों बेटियों को पाँच साल से गतिविधियाँ सीखने के लिए लेकर आ रही हूँ।

— डॉ० निधी जैन

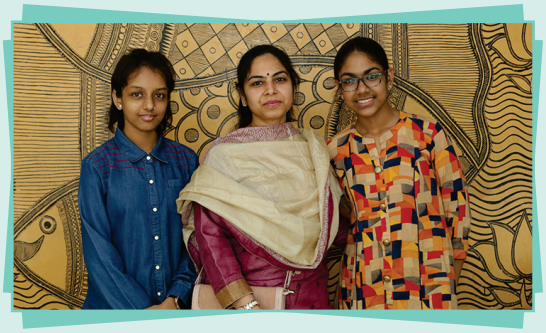

यहाँ फीस बहुत कम है। बच्चे 200/- रू. में पूरे साल गतिविधियाँ सीखते हैं। बच्चों को रा.बा.भ; से बाहर भी कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए ले जाया जाता है, जिसके लिए हमें तो खुशी होती ही है बच्चे भी बहुत उत्सुक होते हैं।

— सुश्री भाग्यश्री वर्मन

यहाँ का वातावरण बहुत शुद्ध है और साफ-सफाई बहुत बढ़िया है, यहाँ बच्चों के लिए कोई पाबंदियाँ नहीं हैं, बच्चे बहुत मस्त रहते हैं। यहाँ आकर मैं भी टैंशन फ्री हो जाती हूँ। मैं अपने बच्चे को पाँच साल से गतिविधियाँ सिखाने ला रही हूँ।

— सुश्री मीनाक्षी

मेरे बच्चे यहाँ कंठ संगीत और गिटार सीखते हैं जिनसे बच्चों को स्टेज तक पहुँचने का मौका मिलता है। सभी प्रशिक्षक बहुत अच्छे हैं। बच्चे यहाँ आकर मोबाईल और टी.वी. से बचते हैं। मुझे भी उनके साथ बाल भवन आना बहुत अच्छा लगता है।

— सुश्री स्वाति सोनी

गतिविधियों के अनुभाग बहुत अच्छे हैं, प्रशिक्षक बहुत अच्छे से जानकारी देते हैं। यहाँ बच्चों के झूले, गौरव-गाथा, मछली घर बहुत ही मनमोहक हैं। बाल भवन बहुत सुन्दर है।

— श्री राहुल (एनजीओ, श्रीनिवास पुरी)

मेरे बच्चों को बाल भवन अपना दूसरा घर लगता है। मैं अपने बच्चों को दो साल से यहाँ लेकर आ रही हूँ बच्चे मोबाईल और टीवी से बचते हैं। बच्चों के साथ मैं भी यहाँ आकर टैंशन मुक्त हो जाती हूँ।

— सुश्री भारती झा

हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम
से संबंधित सामग्री को प्रकाशन
के रूप में तैयार करने में यदि
आपके कोई सुझाव हैं तो
उनका सहर्ष स्वागत है।

राष्ट्रीय बाल भवन
NATIONAL BAL BHAVAN